International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 1039-1042

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 1039-1042
www.allresearchjournal.com
Received: 26-11-2016
Accepted: 29-12-2016

डॉ. ममता
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, भीमराव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Correspondence
डॉ. ममता
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, भीमराव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

'कथा एक कंस की' नाटक में प्रयोगधर्मिता

डॉ. ममता

सार
नाटककार दयाप्रकाश सिन्हा ने 'कथा एक कंस की' नाटक में कंस के मूल चरित्र से छेड़छाड़ किए बिना इसे समकालीन राजनीतिक स्थितियों से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है। नाटक में कंस के चरित्र के दो पहलू उभरकर आते हैं। एक ओर कंस एक क्रूर, आततायी निरंकुश शासक के रूप में दिखता है, वहीं दूसरी तरफ वह एक संगीत प्रेमी, भावुक, अकेलेपन का शिकार, उदास और निराशा में डूबे हुए संवेदनशील व्यक्ति के रूप में दिखाई देता है। उसके चरित्र का यह अन्तर्विरोध इस नाटक की कथावस्तु को गति प्रदान करता है। नाटककार पौराणिक आख्यान के माध्यम से समकालीन स्थितियों, चुनौतियों एवं विडंबनाओं को उजागर करने में सफल रहा है। दूसरे शब्दों में कहे तो कह सकते हैं कि कंस के पौराणिक पात्र को आधुनिक संदर्भों में पुनःसृजित करने में दया प्रकाश सिन्हा सफल रहे है।

बीज शब्द: कंस का पौराणिक आख्यान, समकालीन राजनीतिक संदर्भ, रंगमंचीय प्रयोग।

प्रस्तावना
'कथा एक कंस की' नाटक दयाप्रकाश सिन्हा के नाट्य-कर्म की सबसे सशक्त रचना है। कंस के चरित्र को केंद्र में रखकर रचे गए इस नाटक की कथावस्तु की परिकल्पना अपने नयेपन के कारण पाठक/दर्शक को आकर्षित करती है। नाटककार ने कंस के चरित्र की रचना श्रीमद्भागवत के अतिरिक्त हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण तथा ब्रह्मवैवर्त्त पुराण से प्राप्त संकेतों के आधार पर की है। नाटक में कंस से संबंधित पौराणिक आख्यान के उन पक्षों को पकड़ने की कोशिश की गई है जो स्वतः आज की स्थितियों से जुड़ जाते या उनके बीच प्रासंगिक हो जाते है।

नाटककार ने कंस के मिथक को दो स्तरों पर अर्थान्वित किया है। पहला स्तर है - मानवीय तथा दूसरा राजनीतिक। एक ओर नाटककार ने कंस के पौराणिक चरित्र के माध्यम से एक नृशंस शासक के मनोविज्ञान को परखने का प्रयास किया तो दूसरी ओर इस पौराणिक पात्र को ऐसा मानवीय धरातल प्रदान किया जिससे उसका चरित्र, उसकी समस्याएँ, उसका संघर्ष आज के परिवेश में जी रहे इंसान का प्रतीत होने लगे। नाटककार ने बहुत सारे संदर्भों की नितांत नए ढंग से व्याख्या की है। छोटे से बालक कृष्ण के हाथों पूतना के मारे जाने के मिथकीय-आख्यान को नाटककार ने नयी अर्थवत्ता के साथ प्रस्तुत किया है। स्वयं नाटककार का इस परिप्रेक्ष्य में कहना है कि "मैंने कृष्ण और पूतना के प्रसंग को नवीन

आयाम प्रदान करने का प्रयास किया है। हाल का जन्मा शिशु पूतना की हत्या नहीं कर सकता। पूतना विशेष परिस्थितियों में, कृष्ण को अपना स्तनपान कराते हुए स्वयं विष खा लेती है, जिसे लोग भ्रमवश उस शिशु का चमत्कार समझते हैं, वर्तमान संदर्भ में अधिक उपयुक्त होगा।"[1] पूतना के चरित्र को जानने-समझने के लिए नाटककार ने काफी मेहनत की है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में पूतना को 'साध्वी स्त्री' तथा कई अन्य पुराणों में कंस की 'एकमात्र स्त्री सहायिका' कहा गया है।इन्हीं संदर्भ-सूत्रों का प्रयोग करते हुए नाटककार ने पूतना के चरित्र को एकदम नए ढंग से निरूपित (इंटरप्रेट) किया है। नाटककार ने पूतना को कंस की प्रेयसी के रूप में चित्रित किया है। पूतना को उसकी कोमल छवि के अनुरूप 'स्वाति' नाम देते हुए सिन्हा जी ने कंस और स्वाति के प्रेम-संबंध का मार्मिक चित्रण किया है। अब से पहले संभवतः किसी भी नाटक में स्वाति (पूतना) को कंस के प्रति समर्पित प्रेमिका के रूप में चित्रित नहीं किया गया है। अपने प्रेमी की इच्छा पूरी करने के लिए वह प्रद्योत से विवाह तक कर लेती है।

नाटक में एक ओर जहाँ कंस के चरित्र के माध्यम से निरंकुश शासक को निरंकुश बनाने के लिए उत्तरदायी व्यक्ति एवं परिस्थितियों को जानने-समझने की कोशिश की गई है वहीं संगीत तथा प्रकृति से प्रेम करने वाला कंस कैसे व्यवस्था के चक्रव्यूह में फंसकर छटपटा रहा है? इसका भी तटस्थ जायजा लेने की कोशिश की गई हैं। जहाँ एक ओर वह व्यक्तिगत जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त करते हुए कहता है - 'यह कैसी विडंबना है। कितनी रातें बीत गयी, नींद के एक क्षण को आकुल, व्याकुल। जब मूर्ख जनता अपनी फटी कथरियों में लिपटी, धरती के बिस्तर पर पत्थर का तकिया लगाये सोती है, तब हम परम तेजस्वी, महापराक्रमी, महाबलशाली, महाधिराज परमेश्वर श्रीकंस भगवान, रात के अंधेरे में एकाकी मंडराते है - प्रेत से।'[2] वहीं दूसरी तरफ कंस का क्रूर चरित्र उभरता है, जहाँ वह अपनी प्रेयसी स्वाति (पूतना) की मृत्यु पर कुछ क्षण के लिए भावुक तो होता है लेकिन अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए उसके (पूतना) शव तक को नगर-चौक में फांसी देने का आदेश दे डालता है। कंस का अपनी प्रजा में, स्वयं को परमेश्वर, परमपिता तथा ईश्वर के रूप में प्रचारित-प्रसारित करवाना, हिरण्यकशिपु नामक एक अन्य मिथकीय चरित्र का स्मरण कराता है। नाटक के शुरू से लेकर अंत तक कंस के चरित्र में कुटिल शासक और भावुक संवेदनशील व्यक्तित्व के बीच निरंतर संघर्ष छिड़ा रहता है। दरअसल, दोहरे तनावों को जीता-भोगता कंस का चरित्र, नाटक की जान है।

पौराणिक कथा पर आधारित होते हुए भी कृष्ण और कंस के संबंधों पर आधारित यह नाटक अत्यंत प्रासंगिक एवं समसामयिक है। नाटककार ने प्रस्तुत नाटक की रचना सन् 1974 में की। अतः आपातकालीन स्थितियों एवं परिवेश का इस पर प्रभाव पड़ना अपेक्षित था। नाटककार ने कंस के आततायी चरित्र को चित्रित करते समय कई स्थलों पर तत्कालीन भारतीय शासक के निरंकुश शासन पर व्यंग्य किया है। आपातकालीन संदर्भों में नाटक की सांकेतिकता के संदर्भ में वे कहते है - "मैंने कंस के द्वारा उन व्यक्ति-तंत्री स्वेच्छाचारी शासकों के निर्माण और विनाश का अन्वेषण किया है जिनका समय-समय पर इतिहास के विभिन्न मोड़ों पर आविर्भाव हुआ है, चाहे वह कंस हो या औरंगजेब, हिटलर हो या मुसोलिनी।"[3] कंस को दिन-रात सोते-जागते कृष्ण का भय बना रहता है। रात्रि में कृष्ण, कंस को स्वप्नों में भयातुर करता है तो दिन में कृष्ण की बांसुरी की आवाज़ उसे अपनी सत्ता को चुनौती देती प्रतीत होती है। कंस का निरंकुश, स्वेच्छाचारी एवं आततायी रूप सार्वकालिक है जबकि कृष्ण की वंशी जनविद्रोह की प्रतीक है। आपातकालीन संदर्भों में नाटक की प्रतीकात्मकता बहुत मुखर होकर उभरी हैं। कंस प्रतीक है इन्दिरा गांधी का तो कृष्ण को संगठित भारतीय जनता के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। प्रतीकात्मकता की दृष्टि से कभी-कभी कृष्ण लोकनायक जयप्रकाश नारायण की ओर भी संकेत करता है, जिसने आपातकाल में पूरे देश की जनता को निरंकुश शासक के विरुद्ध एकजुट होकर खड़े होने के लिए प्रेरित किया था। कृष्ण की वंशी, वस्तुतः जनता की राजनीतिक चेतना है। यहाँ जनता की वोट-शक्ति को भी कृष्ण की वंशी के रूप में देखा जा सकता है, जिससे आज भी स्वार्थी और सत्तालोलुप राजनीतिज्ञ बेहद घबराते हैं। इसी प्रकार नाटककार ने आपातकालीन परिस्थितियों एवं तत्कालीन शासक की निरंकुश प्रवृत्ति की ओर भी एकाध दृश्यों में प्रतीकात्मक रूप से संकेत किया है। एक स्थान पर प्रद्योत बताता है कि कसीग्राम के यादवों ने राजस्व देने से इंकार कर दिया है। कसीग्राम के यादवों को व्यवस्था के विरुद्ध जाने की सजा 'कसीग्राम और वहाँ के निवासी दोनों का ही अस्तित्व यादव-साम्राज्य से समाप्त' करके दे दी जाती है। आपातकाल में भी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाने की

सजा पुलिस-फायरिंग के शिकार होने या जेल-यात्रा के रूप में मिलती थी। इसी प्रकार मागध सैनिकों के अत्याचारों से त्रस्त मथुरा की यादव जनता दो मागध सैनिकों की हत्या कर देती है। फलस्वरूप मागध सैनिक बीस यादव नागरिकों की हत्या कर देते है। इसी तरह विद्रोहियों को नगर-चौक पर फांसी चढ़ा दिया जाता है। राज्य-अधिकारियों द्वारा कंस को ऐसी अन्यायपूर्ण स्थितियों का ब्यौरा देकर अंत में 'शांति-व्यवस्था पूर्ण है।' – यह कहना भी अपने आप में व्यंजनापूर्ण है। नाटक में कई अन्य दृश्य-बिंब है जो गहरे अभिप्रायों और प्रतीकात्मकता के साथ आए है यथा – मथुरावासियों में नृसिन्हावतार - रूपक खेलने वाली नाट्य-मंडली के द्वारा कंस के सामने वह रूपक खेलना। कंस उस रूपक में हिरण्यकशिपु के चरित्र में अपनी झलक पाता है। फलतः नृसिन्हावतार के हाथों हिरण्यकशिपु के अंत के दृश्य को देख वह आगबबूला हो जाता है और 'आज से यादव-साम्राज्य में नाटक नहीं होंगे' – यह फरमान जारी कर देता है। आपातकाल में भी तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने अपनी कार्य-प्रणाली पर व्यंग्य करने वाले साहित्य एवं फिल्मों पर प्रतिबंध लगा दिया था। 'किस्सा कुर्सी का' (अमृत नाहटा) और 'आंधी' (गुलजार), फिल्म इसके ज्वलंत उदाहरण है। नाटक में एक अन्य दृश्य, जिसमें अनिद्रा के शिकार कंस को बाहुक, प्रलंब और प्रद्योत लोरी सुनाकर सुलाने की चेष्टा कर रहे है, भी प्रतीकात्मक है। शासक कंस को लोरी सुनाया जाना, जहाँ एक ओर उसके असुरक्षा-बोध की ओर संकेत करता है वहीं यह भी दर्शाता है कि भले ही कंस एक क्रूर शासक हो लेकिन उसके भीतर छिपा बालक कंस अभी भी जीवित है।

'कथा एक कंस की' नाटक का नाट्यशिल्प उसकी वस्तु के अनुरूप अत्यंत सुगठित है। इस दो अंकीय नाटक में संपूर्ण घटनाचक्र कंस के इर्द-गिर्द घूमता है। नाटक की भाषा काव्यात्मक है लेकिन संप्रेषण में आड़े नहीं आती। नाट्य-भाषा में विशेषकर संवादों में एक बिंदु ऐसा आता है, जहाँ 'ग़द्य' और 'काव्य' की सीमाएँ एकमेक हो जाती है। दयाप्रकाश सिन्हा ने पात्रानुसार भाषा का प्रयोग तो किया ही है, साथ ही पात्रों के चरित्र, व्यवहार, संस्कार एवं मनोविज्ञान आदि को ध्यान में रखकर उपयुक्त भाषिक प्रयोग भी किया है। यही वजह है कि नाटकीय कार्य-व्यवहार में स्वाभाविकता और विश्वसनीयता आ गई है। ग्रहणशीलता की दृष्टि से देखे तो संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी भाषा क्लिष्ट नहीं है। सक्रिय रंगकर्मी होने के कारण नाटककार ने आलोच्य नाटक के संवादों में भी गति, लय, वैविध्य आदि का विशेष ध्यान रखा है। यही वजह है कि नाटक में निहित व्यंग्य स्पष्ट और सहज है।

पौराणिक आख्यान पर आधारित आलोच्य नाटक में नाटककार ने कथ्य और शिल्प के स्तर पर कई प्रयोग किए हैं। कोई रचना कितनी प्रयोगधर्मी है यह रचनाकार की रचनाधर्मिता और उसकी प्रतिभा पर निर्भर करता है। चूँकि नाटक एक दृश्य विधा है अतः पौराणिक आख्यान को नई अर्थवत्ता प्रदान करने की दृष्टि से प्रयोगधर्मिता आवश्यक हो जाती है। नाटककार दया प्रकाश सिन्हा ने कंस के पौराणिक कथ्य को नई अर्थवत्ता प्रदान करने के साथ-साथ उसके मंचन में भी नवीनता लाने का सफल प्रयास किया है। आलोच्य नाटक में अर्थ और शिल्प दोनों स्तरों पर प्रयोग में नूतनता और नवीनता का समावेश है। नाटककार ने एक ओर कंस के चरित्र को महज खलनायक के रूप में ही चित्रित न करके उसके संवेदनशील रूप को भी उकेरने की कोशिश की है, वहीं पात्रों के मनोभावों विशेषकर कंस की मनःस्थिति के अनुरूप रंग-संकेत, प्रकाश-व्यवस्था एवं ध्वनि-संकेतों की योजना भी की है। परम्परागत आख्यान को नई अर्थवत्ता प्रदान करना ही प्रयोग है लेकिन इस प्रयास में उन्होंने परम्परा को हाशिए पर नहीं धकेला। प्रायः प्रयोगधर्मिता के नाम पर पौराणिक आख्यानों के अर्थ का अनर्थ कर दिया जाता है लेकिन नाटककार ने कंस के मूल चरित्र के साथ छेड़छाड़ करने से बचते हुए उसके चरित्र को समसामयिक संदर्भों से जोड़ने का सफल प्रयास किया है।

शिल्प के स्तर पर भी कंस के चरित्र के विविध पक्षों का उद्घाटन करने के लिए कई तरह के शिल्पगत प्रयोग किए हैं। कंस के चरित्र-प्रकाशन में एकालाप अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कंस के एकालाप, उसके अकेलेपन तथा आत्मविश्वास से रहित व्यक्तित्व को उजागर करते है। नाटककार ने कंस के चरित्र को उजागर करने में एकालाप का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया है। शिल्प के स्तर पर इस नाटक की सबसे बड़ी खूबसूरती कंस के विगत जीवन की स्मृतियों के दृश्यों को 'फ्लैशबैक' तकनीक के माध्यम से चित्रांकित करना है। निरंकुश शासक कंस जिससे सारी मथुरा कांपती है, स्वयं भीतर से अबोध बालक की भाँति भयातुर है। अतीत की स्मृतियाँ विशेषकर पिता उग्रसेन द्वारा बालक कंस को बार-बार प्रताड़ित करने का दृश्य, कथानक को गति प्रदान करता है। नाटक में कुछ विशेष प्रकार के दृश्यों की परिकल्पना नाटक की गति बढ़ाने एवं रोचकता की दृष्टि से

महत्त्वपूर्ण है। देवकी और कंस के परस्पर संवाद, नाटक की सांकेतिकता तथा कंस के चरित्र के दो पहलुओं को दर्शाता है।

नाटककार ने कंस के मिथकीय चरित्र की ऐसी व्याख्या प्रस्तुत की है जो नाटककार के समकालिक संदर्भों में भी प्रासंगिक बन गई है। इसके अतिरिक्त नाटककार भावों, घातों, प्रतिघातों एवं अर्थ-छायाओं को लेकर सचेत दिखता है। किसी चरित्र की उम्र क्या है? उसकी वेशभूषा, उसके दूसरे पात्रों से संबंध तथा नाटक के आरंभ से अंत तक उसका चारित्रिक विकास – इन सबका बखूबी ख्याल रखा गया है।

कुल मिलाकर दयाप्रकाश सिन्हा ने पौराणिक कथानक के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण रखते हुए उसे आज स्थिति से सफलतापूर्वक जोड़ा है। नाटककार की उपलब्धि आलोच्य नाटक के पौराणिक आख्यान को एक नया तर्कसंगत तथा बुद्धिवादी रूप देने में है। यही वजह है कि 'कथा एक कंस की' नाटक की प्रासंगिकता आज भी यथावत् है।

निष्कर्षः-

संक्षेप में 'कथा एक कंस की' नाटक में दयाप्रकाश सिन्हा ने कंस के चरित्र तथा उसकी शासकीय-प्रशासकीय गतिविधियों के माध्यम से समकालीन युगबोध को जीवन्त कर दिया है। नाटककार ने 'कंस' के रूढ़ चरित्र में कोई उलट-फेर नहीं करते हुए उसको आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाने की दृष्टि से मौलिक प्रयोग किए हैं। कंस के मूल मिथकीय चरित्र का संरक्षण करते हुए आधुनिक भावबोध से सम्पृक्त करना, नाटककार की बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। परम्परा का पुनर्सृजन करके नाटककार ने पौराणिक आख्यान की 'अर्थवत्ता' के साथ-साथ इसे आधुनिक भावबोध से भी जोड़ने की कोशिश की है। साहित्यिकता और रंगमंचीयता दोनों ही मानकों पर यह नाटक खरा उतरता है।

संदर्भ-सूची

1. 'कथा एक कंस की', दयाप्रकाश सिन्हा, पृ॰सं॰ 11, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2008
2. वही, पृष्ठ सं॰ 30
3. वही, पृष्ठ सं॰ 13